ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 250-252

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

डॉ0 राम मनोहर लोहिया का समग्र चिंतनः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

रामअचल यादव

असि0 प्रो0– इतिहास विभाग, बाबा बरुआ दास पी.जी.कॉलेज परुइया आश्रम,अंबेडकर नगर (उ0प्र0) भारत

Received-19.06.2022, Revised-24.06.2022, Accepted-28.06.2022 E-mail: yadavramachal40@gmail.com

सारांशः – ***आधुनिक युग में मनुष्य नैतिक मूल्यों के संक्रमण के दौर से गुजर रहा है जिसके कारण मानव मूल्य के स्वरूप में तेजी से गिरावट हो रही है। अप्रत्याशित परिवर्तन हो रहा है। नैतिक मूल्यों में तेजी से ह्रश्य हो रहा है। सुविधा संपन्न और निर्धन वर्ग के बीच घटता हुआ अंतराल जिस सामाजिक परिदृश्य का निर्माण कर रहा है उसके कारण भारत में जनप्रतिनिधित्व है परंतु जनहित की भावना नहीं, ग्रामीण योजनाओं का कार्यान्वयन है, किंतु गांव की आत्मनिर्भरता नहीं। इन समकालीन परिस्थितियों में बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ राम मनोहर लोहिया के विचार प्रासंगिक हो जाते हैं। वे ऐसी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे जिसमें आर्थिक विषमता का अंत हो और समाज के विकास में सभी वर्गों की बराबरी की हिस्सेदारी रहे।***

कुंजीभूत शब्द– आधुनिक युग, नैतिक मूल्यों, संक्रमण, परिदृश्य, जनप्रतिनिधित्व, बहुमुखी प्रतिभा, आर्थिक विषमता।

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन के क्षितिज पर अनेक विचारकों का आविर्भाव हुआ है जिसमें प्रखर समाजवादी विचारक और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ राम मनोहर लोहिया अग्रणी हैं। लोहिया जी का जन्म 23 मार्च 1910 में अकबरपुर, जनपद फैजाबाद ख्तत्कालीन जनपद, उत्तर प्रदेश में हुआ था वर्तमान में अकबरपुर जनपद है द्य लोहिया जी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा टंडन पाठशाला अकबरपुर में हुई। 1917 में पिताजी के साथ अहमदाबाद चले गए जहां कांग्रेस के अधिवेशन में महात्मा गांधी जी से प्रथम दर्शन हुआ । उनके विचारों से प्रभावित हुए। इंटरमीडिएट बनारस से और स्नातक कोलकाता विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण किया । 1932 में होमबोल्ट विश्वविद्यालय बर्लिन जर्मनी से लोहिया जी ने नमक सत्याग्रह विषय पर शोध प्रबंध पूरा कर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त किया। जर्मनी से उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वदेश वापस आने के बाद लोहिया जी ने सुविधा पूर्ण जीवन के स्थान पर देश की आजादी के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। लोहिया जी अंग्रेजी, फ्रेंच, मराठी, बंगला, हिंदी आदि कई भाषाओ के विद्वान थे । 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। हजारीबाग जेल से जयप्रकाश नारायण और लोहिया जी फरार हुए और भूमिगत होकर उषा मेहता के साथ गुप्त रेडिओ का प्रसारण कर किया और गिरतार कर जेल गए फिर 1946 में इन्हें रिहा कर दिया गया ।

1955 मैं लोहिया जी ने नई सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना किया, जिसके अध्यक्ष बने। उन्होंने इस बात का समर्थन किया कि समाजवादी चिंतन में गांधीवादी विचारों को सम्मिलित किया जाय। लोहिया जी का सम्पूर्ण जीवन समाजवादी विचारों के प्रचार प्रसार में व्यतीत हुआ । उनका निधन 12 अक्टूबर 1967 को दिल्ली में हुआ।

डॉ0 राम मनोहर लोहिया जीनेअपने विचारों द्वारा समाज को एक नई दिशा दिया और समाज कल्याण के लिए प्रत्येक प्रकार के शोषण, विवशता और गुलामी का विरोध किया। वे रिक्शे की सवारी नहीं करते थे क्योंकि एक आदमी एक आदमी को बैठाकर खींचे यह अमानवीयहै,उसकी विवशता का प्रतीक है। लोहिया जी कुटीर उद्योग पर आधारित विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था के पक्ष में थे, छोटी–छोटी मशीनों का समर्थन किया जिनके द्वारा थोड़ी सी पूजी लगाकर श्रम शक्ति का अधिक से अधिक उपयोग किया जा सके। उनका विचार था कि प्रत्येक व्यक्ति को और उनकी उन्नति का तथा जीवन निर्वाह के उपायों के प्रति समान अवसर प्राप्त हो और सामाज के शासन और व्यवस्था में भाग लेकर आत्म निर्णय का समान अधिकार प्राप्त हो,डा0 लोहिया के समग्र विचार कीअवधारणा निम्न लिखित शीर्षक द्वारा किया जाता है–

लोहिया के इतिहास चक्र की अवधारणा– डॉक्टर लोहिया के अनुसार इतिहास सरल रेखा की भांति आगे बढ़ता है उसकी गति चक्र के समान होती है उन्होंने अपनी पुस्तक व्हील ऑफ हिस्ट्री (wheel of history)इतिहास चक्र में विचार प्रस्तुत किया है। डॉक्टर लोहिया के अनुसार जाति और वर्ग ऐतिहासिक गतिमान की दो प्रमुख शक्तियां है। इन दोनों के बीच लगातार खींचतान चलती और इनके टकराव से इतिहास आगे बढ़ता है। जाति रूढ़िवादी शक्ति का प्रतीक है जो चढ़ता को आगे बढ़ावा देती है और समाज को बधी– बधाई लीक पर चलने को विवश कर देती है।

लोहिया जी का मत था कि अब तक मानव इतिहास जातियों एवं वर्गों के आंतरिक विकास का इतिहास है। वे जातियां शिथिल होकर वर्गों में परिणित हो जाती हैं और वर्ग संगठित होकर जातियों का रूप धारण कर लेते हैं। जाति व्यवस्था को लोहिया जी एक बुराई समझते थे जो भारत के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। उनका विचार था कि भारत के इतिहास में दासता का एक लंबा दौर जाति व्यवस्था का ही परिणाम था क्योंकि वे भारतीय जन जीवन को सदियों तक

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

भीतर से कमजोर करती रही है। जाति व्यवस्था को समाप्त करने के लिए उन्होंने अंतर्जातीय विवाह का समर्थन किया। इस संबंध में उनका विचार था कि भारतीयों की स्थिति विश्व के बड़े–बड़े देश के नेताओं के बीच वही थी जो समाज में मेहतर की है। इन देशों से बराबरी का दर्जा तभी हासिल कर सकते हैं जब यहां जाति–पात भूल जाए । जब तक अपने यहां चमार, भंगी, शूद्र बनाए रखोगे, तब तक विश्व समाज में उनकी यही स्थिति होगी । जाति एक समस्या है, यह सभ्य समाज के विकास में बाधक है।

लोहिया जी के सामाजिक विचार – युगपुरुष लोहिया जी का समाजवादी आंदोलन के विकास में महत्त्व पूर्ण योगदान रहा है । वे भारत में ऐसी समाजवादी व्यवस्था की स्थापना करना चाहते थे जो मानव समाज के कल्याण के लिए प्रत्येक प्रकार के शोषण, विवशता और परतंत्रता का विरोधी हो, इसमें समाज के उत्थान और विकास की विचारधारा निहित है । लोहिया जी सामाजिक क्रांति के समर्थक थे । जाति प्रथा, रंगभेद नीति के कट्टर विरोधी थे । उन्होंने कहा था कि इतिहास में सभी जातियों एवं वर्गों का संघर्ष देखने को मिलता है। जातियां गतिहीनता, निष्क्रियता तथा रूढ़िगत अधिकारों की पुरातन वादी शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। वर्ग सामाजिक गतिशीलता की प्रचंड शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है।

डॉ. लोहिया जी महिला मुक्ति के महान समर्थक थे। स्त्री पुरुष के बीच विषमता का अंत करना चाहते थे। स्त्रियों पर प्रचलित नैतिक मान्यताओं द्वारा किए जा रहे अत्याचार को समाप्त करने के पक्षपाती थे। वे कहते थे कि समाज में प्रचलित मूल्य और नैतिक मान्यताएं यदि स्त्री पर अत्याचार करती हैं, तो उसे तोड़ने में कोई बुराई नहीं है।

लोहिया जी हिंदू–मुस्लिम एकता के कट्टर समर्थक थे उन्होंने मोहम्मद अली जिन्ना के द्विराष्ट्र सिद्धांत का विरोध किया और कहा कि भारत विभाजन से सांप्रदायिकता जैसी समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता है। यह समस्या दोनों देशों को आपस में उलझा कर रख दिया है, दोनों देशों के बीच तनाव का कारण भी यही है। वे चाहते थे कि दोनों देश आपसी मतभेद भुलाकर प्रेम एवं सौहार्द पूर्वक रहे। इसके लिए वे भारत–पाक का एक प्रस्तावित हिन्द–पाक संघ का विचार दिया । लोहिया जी रंगभेद नीति जैसी अंतरराष्ट्रीय समस्या का भी विरोध किया। उन्होंने कहा की यह एक अंतरराष्ट्रीय सामाजिक समस्या है, यह भारत के छूत अछूत समस्या से मिलती–जुलती है। इसका समाधान सत्याग्रह जैसे अहिंसात्मक आंदोलन चलाकर समाप्त किया जा सकता है।

लोहिया जी के राजनीतिक विचार– समाजवादी विचारक लोहिया जी ग्राम शासन की ग्रामीण विकेंद्रीकृत शासन व्यवस्था के पक्षपाती थे उन्होंने बताया कि समाज की संरचना में चार परतें संलमत पाई जाती हैं– ग्राम, मंडल, प्रांत, और राष्ट्र। यदि राज्य का संगठन इन पर्दों के अनुसार किया जाए तो वह समुदाय का सच्चा प्रतिनिधि बन जाएगा। इस व्यवस्था को लोहिया जी ने चौखंभा राज्य की संज्ञा दी। इस व्यवस्था के अंतर्गत गांव, मंडल, जिला, प्रांत तथा केंद्रीय सरकार का महत्व बना रहेगा और उन्हें एक कार्य मूलक संघवाद की व्यवस्था के अंतर्गत एकी.त कर दिया जाएगा, क्योंकि वह राजनीतिक शक्ति के केंद्रीकरण की बदनाम संस्था है। इसके अतिरिक्त मंडलों, गांवों तथा नगरों की पंचायतें कल्याणकारी नीतियों एवं कार्यों का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेंगी ।

जिस प्रकार चारों खंभा पृथक पृथक अस्तित्व रखते हुए भी छत को संभाल लेते हैं उसी प्रकार यह व्यवस्था केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण की परस्पर विरोधी अवधारणा के बीच सामंजस्य स्थापित करेगी। इस प्रस्तावित व्यवस्था का लोहिया जी विश्व स्तर तक विस्तार करने अर्थात विश्व संसद और विश्व सरकार के संगठन का सुझाव दिया।

लोहिया जी के आर्थिक विचार– लोहिया जी का आर्थिक विचार उनके राजनीतिक, सामाजिक दर्शन का आधार था, उनके दर्शन का मुख्य उद्देश्य समाज से आर्थिक विषमता का अंत करना था। समाज का आधार वास्तव में आर्थिक होता है क्योंकि आर्थिक असमानता ही सभी असमानताओं की जड़ है । लोहिया जी विकेंद्रीकृत समाजवाद के सिद्धांत के अंतर्गत विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था का समर्थन किया। वे ग्रामीण उद्योग और कुटीर उद्योग द्वारा लोगों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे जिससे कि व्यक्ति व्यक्तित्व का पूर्ण विकास हो और आत्म निर्भर बन सके ।

निष्कर्ष– ऐतिहासिक विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में मानवीय मूल्यों और नैतिकता का जिस गति से हो रहा है । पद और शक्ति पाने के लिए हिंसा, प्रलोभन, झूठे वादे आदि का प्रयोग किया जा रहा है, ऐसी स्थिति में लोहिया जी का विचार महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उनका पूरा जीवन सादगी भरा रहा है। उनका विचार अमीर और गरीब के बीच की खंई को पाटने का था जिससे समाज में भाईचारा का विकास हो । वे गांधीजी की भांति अहिंसा, सत्याग्रह में विश्वास करते थे । राजनीतिक क्षेत्र में नैतिकता के समर्थक थे जिससे राजनीतिक दल के नेता अपनी जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व का इमानदारी पूर्वक निर्वहन कर सके । आधुनिक भारतीय सामाजिक और राजनीतिक चिंतन डॉ0बी0पी0वर्मा का यह कथन सत्य ही प्रतीत होता है कि 'लोहिया जी अपने समाजवादी चिंतन में समस्याओं को एशियाई दृष्टिकोण से देखने

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

का प्रयास किया । वे अपने कार्य और चिंतन द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व की विकास की समस्याओं को हमेशा ध्यान में रखा ।'

लोहिया जी का चौखम्बा राज्य महत्वपूर्ण है । इससे ग्रामीण विकास में मदद मिलेगी। वर्तमान समय में भारत में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को अपनाया गया है। आज गांव को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अधिक से अधिक अधिकार दिए जा रहे हैं । लोहिया जी ने लोकतांत्रिक व्यवस्था, राजनीतिक स्वतंत्रता विशेषः अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संघ निर्माण की स्वतंत्रता और जीवन के निजी क्षेत्र की सुरक्षा पर विशेष बल दिया।

ऐतिहासिक दृष्टकोण के अध्ययन द्वारा यह स्पष्ट होता है कि लोहिया जी अपनी समाजवादी चिंतन द्वारा लघु एवं कुटीर उद्योग, चौखम्बा राज्य इत्यादि के द्वारा लोगों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे जिससे कि भारत एक आत्म निर्भर और शक्तिशाली राष्ट्र बन सके । डॉ0 राम मनोहर लोहिया जी का ऐतिहासिक जीवन एवं चिंतन आगामी मानव जाति और व्यवस्था का मार्गदर्शन करने मे हमेशा अग्रणी रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. ओमप्रकाश भारतीय, भारतीय सामाजिक विचार य विजय प्रकाशन मंदिर वाराणसी, पृ. सं. 237.
2. लोहिया,डॉ. राम मनोहरः व्हील आप हिस्ट्री,पृ.सं. 51.
3. गावा, ओ.पी.राजनीतिक चिंतन की रूपरेखाःमयूर पेपर बॉक्स नई दिल्ली'पृ. सं. 407.
4. शरद, ओंकार,लोहिया के विचारः पृ. सं. 110–1.
5. बर्मा, डॉ.बी.पी. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतनः लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रेस आगरा,पृ. सं. 593.
6. लोहिया, डॉ. राम मनोहरः दिल टू पावर एंड अदर राइटिंग,जय हिंद पब्लिकेशन हैदराबाद 1956 पृ. सं.132.
7. गावा, ओ.पी., वही 'पृ. सं. 408.
8. बर्मा, डॉ.बी.पी. वही, पृ. सं. 594.

*****